Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 6 | ISSUE : 12 | DECEMBER 2020

उदयपुर जिले में एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम की स्थिति, समस्याएँ और सुझाव
STATUS, PROBLEMS AND SUGGESTIONS OF S.I.Q.E. PROGRAMME IN UDAIPUR DISTRICT

ऋतु वशिष्ठ [1]

[1] व्याख्याता, विज्ञान विभाग, राजदेव शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर (राज)

ABSTRACT:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में **"उदयपुर जिले में एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम की स्थिति, समस्याएँ और सुझाव"** का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। न्यादर्श के रूप में 10 राजकीय ग्रामीण व 10 राजकीय शहरी विद्यालयों का चयन किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 10 शिक्षकों व प्रधानाध्यपक का चयन किया गया अर्थात् कुल 100 शिक्षको व 20 प्रधानाध्यापको को सम्मिलित किया गया है, आंकडों के संकलन के लिए साक्षात्कार प्रपत्र व प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रतिशत सांख्यिंकीय प्रविधि के आधार पर प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के आंकडों से पता चलता है कि गतिविधि आधारित शिक्षण व बालकों के सर्वागीण विकास के उद्देश्य से लागू किया गया एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम एक सराहनीय प्रयास है परन्तु आवश्यकता है इसे सुचारू रूप से चलाने की। एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम से विद्यार्थियों की पढनें मे रूचि बढी है। पूर्व की अपेक्षा वर्तमान में सिखने -सिखाने के स्थितियों में शहरी विद्यालयों में 90% व ग्रामीण विद्यालयों में 94% अन्तर आया हैं। जिला व राज्य स्तरीय संस्थाओं का सहयोग शहरी विद्यालयों में 88% व ग्रामीण विद्यालयों में 96% है। इस कार्यक्रम सें उदयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण समन्वित विद्यालयों में आने वाली कठिनाईयों व समस्याओं में अपेक्षित सुधार होगा। इससे विद्यार्थियों में पढने के प्रति रूचि उत्पन्न होगी। इस कार्यक्रम की गुणवत्ता बढाने हेतु अभिभावको को जागरूक करने की आवश्यकता है जिससे वे बच्चों को समय पर व रोजाना विद्यालय भेजने के लिए तत्पर हो।

KEYWORDS:

एस.आई.क्यू.ई., स्थिति, समस्याए और सुझाव

प्रस्तावना :–

एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम (स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एजुकेशन) यह कार्यक्रम समन्वित राजकीय माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने का सार्थक प्रयास है। राज्य सरकार ने सत्र 2015–16 से सतत् एवं व्यापक आंकलन व बालकेन्दित शिक्षण प्रक्रिया को आदर्श विद्यालयों की 1–5 कक्षाओं में लागू करने का निर्णय लिया है। इसके अंतर्गत इस वर्ष होने वाले शिक्षक प्रशिक्षकों में समन्वित विद्यालयों में प्राथमिक कक्षाओं के साथ अध्यापन करवाने वाले शिक्षकों को स्टेट इनीसिएटिव फॉर क्वालिटी एजुकेशन कार्यक्रम को समझना आवश्यक है। आदर्श विद्यालयों की स्थापना के पीछे राज्य सरकार का सपना है। प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर 6 वर्ष से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए शिक्षा हेतु गुणवत्ता संस्थान उपलब्ध कराना। इस प्रयास के पीछे राज्य सरकार का विश्वास है कि सब बच्चें सीख सकते है और सभी शिक्षक पढ़ सकते है। इन आदर्श विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए राज्य सरकार ने यूनिसेफ और बोध शिक्षा समिति जयपुर के साथ एक एम.ओ.यू. किया है। इस एम ओ यू के तहत राज्य के सभी आदर्श विद्यालयों में चरणवार रूप में कक्षा 1 से 8 में गतिविधि आधारित शिक्षण एवं व्यापक तथा सतत् मूल्यांकन का एक समन्वित कार्यक्रम लागू किया जाएगा। अकादमिक वर्ष 2015–16 में कक्षा 1 से 5 तक यह कार्यक्रम संचालित किया जाएगा। जिन विद्यालयों में पूर्व में कक्षा 6 से 8 में यह कार्यक्रम संचालित है उनमें यह यथा स्वरूप में संचालित किया जाता रहेगा।

यह समन्वित कार्यक्रम राज्य के 22,000 विद्यालयों में क्रियान्वयन के अनुभवों पर आधारित है। वर्ष 2010 में 60 विद्यालयों में प्रारंभ किए गए पायलट प्रोजेक्ट से वर्ष 2014–15 तक 22000 विद्यालयों में विस्तार एवं क्रियान्वयन के सकारात्मक परिणाम उभर कर आए है। गतिविधि आधारित शिक्षण एवं व्यापक तथा सतत् मूल्यांकन लागू करने से बच्चें के शैक्षिक स्तर में गुणात्मक सुधार नजर आने लगा है। शिक्षकों का कक्षा–कक्ष में गतिविधि आधारित शिक्षण प्रक्रिया अपनाने के प्रति रूझान बढ़ा है। अकादमिक वर्ष 2015–16 में कक्षा 1 से 5 तक यह कार्यक्रम संचालित किया जाएगा। जिन विद्यालयों में पूर्व में कक्षा 6 से 8 में यह कार्यक्रम संचालित है। उनमें यह स्वरूप में संचालित किया जाता रहेगा। यह समन्वित कार्यक्रम राज्य के 22000 प्राथमिक विद्यालयों में क्रियान्वयन के अनुभवों पर आधारित है। वर्ष 2010 में 60 विद्यालयों में प्रारम्भ किए गए पायलट प्रोजेक्ट से वर्ष 2014–15 तक 22000 विद्यालयों में विस्तार एवं क्रियान्वयन के सकारात्मक परिणाम उभर कर आए हैं। बालकेन्द्रित गतिविधि आधारित शिक्षण पद्धति और सतत् और व्यापक आकलन इस कार्यक्रम के प्रमुख आधार है। गतिविधि आधारित शिक्षण तथा सतत् व व्यापक मूल्यांकन सीखने–सीखाने की ऐसी समन्वित प्रक्रिया है जिसमें प्रत्येक बच्चे को सीखने के स्तर, गति एवं रूचि को ध्यान में रखते हुए शिक्षण एवं आकलन का कार्य शिक्षक द्वारा किया जाता है। शिक्षक कक्षा–कक्ष में प्रवेश से पूर्व शिक्षण–अधिगम की व्यापक एवं सतत् कार्य योजना बना लेता है तथा उसी के आधार पर विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति का व्यापक एवं सतत् मूल्यांकन करता है।

शोध उद्देश्य

1. उदयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण विद्यालयों में एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम की स्थिति का अध्ययन करना।
2. उदयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण विद्यालयों में एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम की समस्याओं का अध्ययन करना।
3. उदयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण विद्यालयों में एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम कार्यक्रम की स्थिति व समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. SIQE कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

परिसीमन

किसी भी विशिष्ट समस्या को छोटा रूप प्रदान करने के लिए उसके क्षेत्र का परिसीमन करना बहुत आवश्यक होता है। यदि समस्या सीमित एवं स्पष्ट होगी तो उसका अध्ययन भी गहनता से किया जा सकेगा। अतः अध्ययन की सुलभता, समयाभाव के कारण प्रस्तुत शोध प्रबंध को उदयपुर जिले तक परिसीमित किया गया है।

न्यादर्श

शोध कार्य की सम्पूर्ति हेतु न्यादर्श का चयन करना आवश्यक होता है। न्यादर्श शोध

कार्य की आधारशिला है, अर्थात् शोध के परिणामों की विश्वसनीयता और परिशुद्धता न्यादर्श चयन पर निर्भर करता है। न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया।

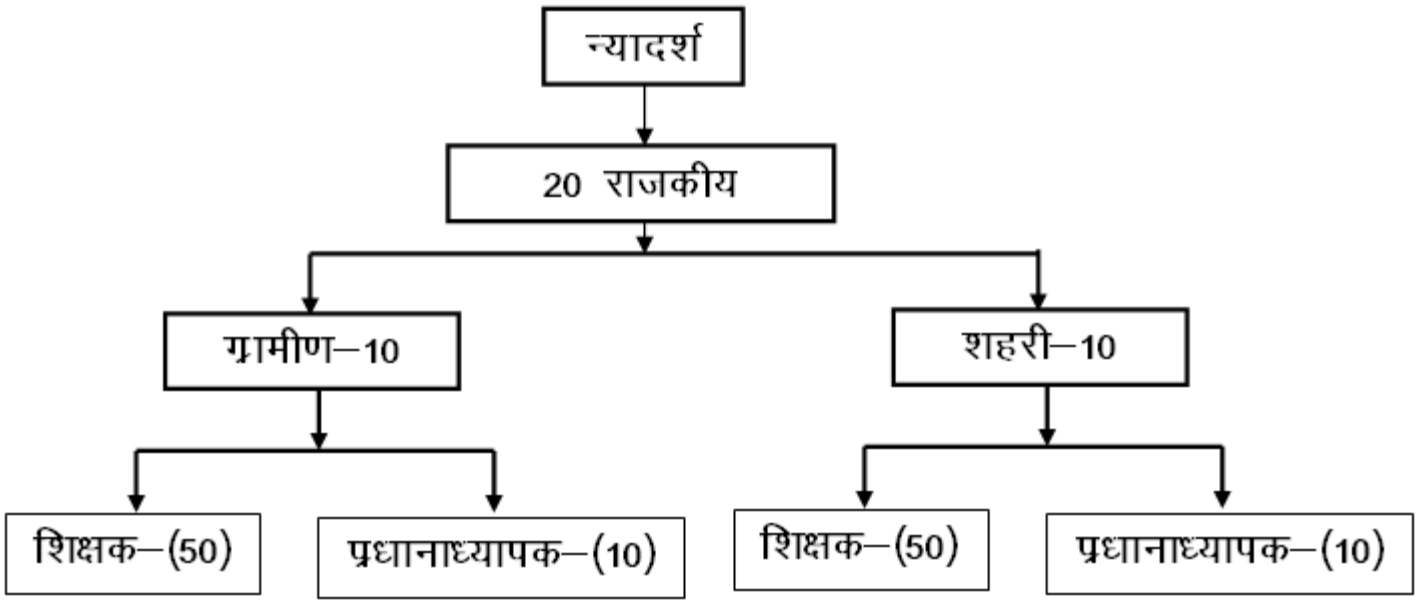

अध्ययन विधि

किसी भी शोध कार्य में अध्ययन विधि का चयन सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। त्रुटिपूर्ण विधि के चयन से शोध कार्य की विश्वसनीयता, वैधता तथा उपयोगिता का ह्रास होता है। प्रस्तुत अध्ययन में ***''साक्षात्कार व सर्वेक्षण विधि''*** का चयन किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध में ''**प्रतिशत**'' सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया ।समंकों के विश्लेषण को प्रदर्शित करने हेतु दण्ड चित्रों का उपयोग किया गया है।

उपकरण

प्रत्येक अनुसंधान का आधार उसका उपकरण होता है। उपकरण ही वह साधन है जिसके द्वारा अनुसंधानकर्ता अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। उपकरणों का चयन तथा निर्माण शोध समस्या की प्रवृति एवं प्रारूप पर अवलम्बित होता है। आंकड़ों को संग्रह करने हेतु शोधार्थी वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग करता है।

इस शोध कार्य हेतु शोधार्थी द्वारा अध्यापक हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया :–

सारणी संख्या–1

उदयपुर जिले में ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में संचालित S.I.Q.E. कार्यक्रम में सीखने सीखाने की वस्तुस्थिति का तुलनात्मक प्रतिशतवार मत

क्र.सं.	सीखने सीखाने की वस्तुस्थिति	सहमति प्रतिशत					
		शहरी			ग्रामीण		
		हाँ	नहीं	अनिश्चित	हाँ	नहीं	अनिश्चित
1.	क्या पूर्व की अपेक्षा वर्तमान में सीखने–सीखाने की स्थितियों में अन्तर आया है?	90	2	8	94	0	6
2.	विद्यार्थियों के सीखने के अवसरों में वृद्धि हुई है?	88	0	12	94	0	6
3.	विद्यार्थी कक्षा में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दे पाते हैं?	68	0	32	78	2	20
4.	कक्षा में शिक्षण कार्य में विद्यार्थियों की सहभागिता रहती है?	100	0	0	86	8	6
5.	शिक्षण सामग्री निर्माण में बच्चों की रूचि का ध्यान रखा जाता है?	98	0	2	86	0	14
6.	कक्षा में समूह चर्चा आयोजित की जाती है?	90	0	10	84	6	10
7.	विद्यार्थी गतिविधियों से अनुभव एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर पाते हैं?	76	0	24	92	0	8

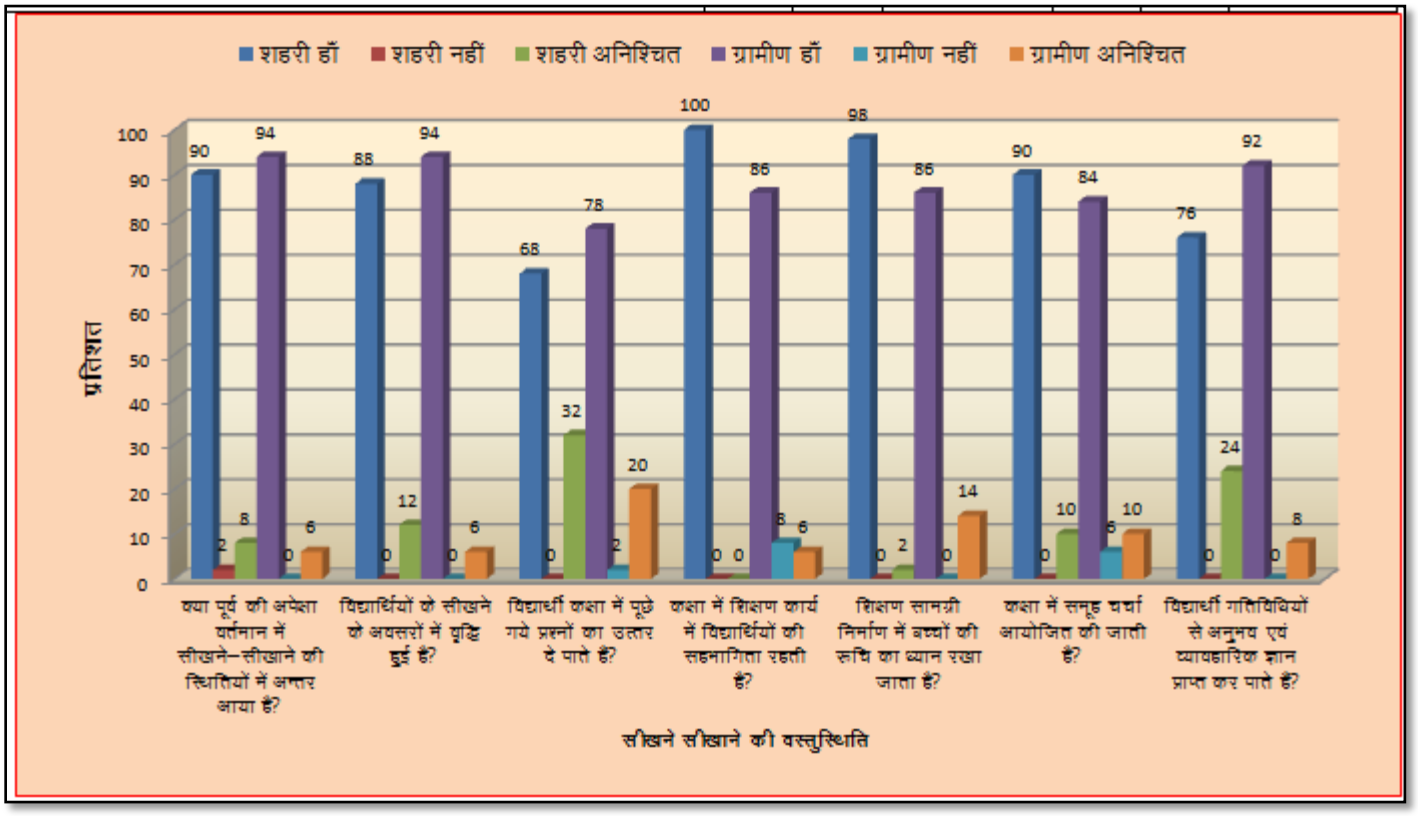

आरेख संख्या–1

उदयपुर जिले में ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में संचालित **S.I.Q.E.** कार्यक्रम में सीखने सीखाने की वस्तुस्थिति का तुलनात्मक प्रतिशतवार मत

सारणी संख्या–2

उदयपुर जिले में ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में संचालित **S.I.Q.E.** कार्यक्रम में जिला एवं राज्य स्तरीय संस्थाओं की भूमिका की स्थिति का तुलनात्मक प्रतिशतवार मत

क्र.सं.	जिला एवं राज्य स्तरीय संस्थाओं की भूमिका	सहमति प्रतिशत					
		शहरी			ग्रामीण		
		हाँ	नहीं	अनिश्चित	हाँ	नहीं	अनिश्चित
1.	जिला व राज्य स्तरीय संस्थाओं का सहयोग	88	8	4	96	2	2
2.	जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	96	0	4	98	0	2
3.	प्रधानाध्यापक द्वारा जिला स्तरीय संस्थाओं से जुड़े रहने का प्रयास	96	0	4	100	0	0

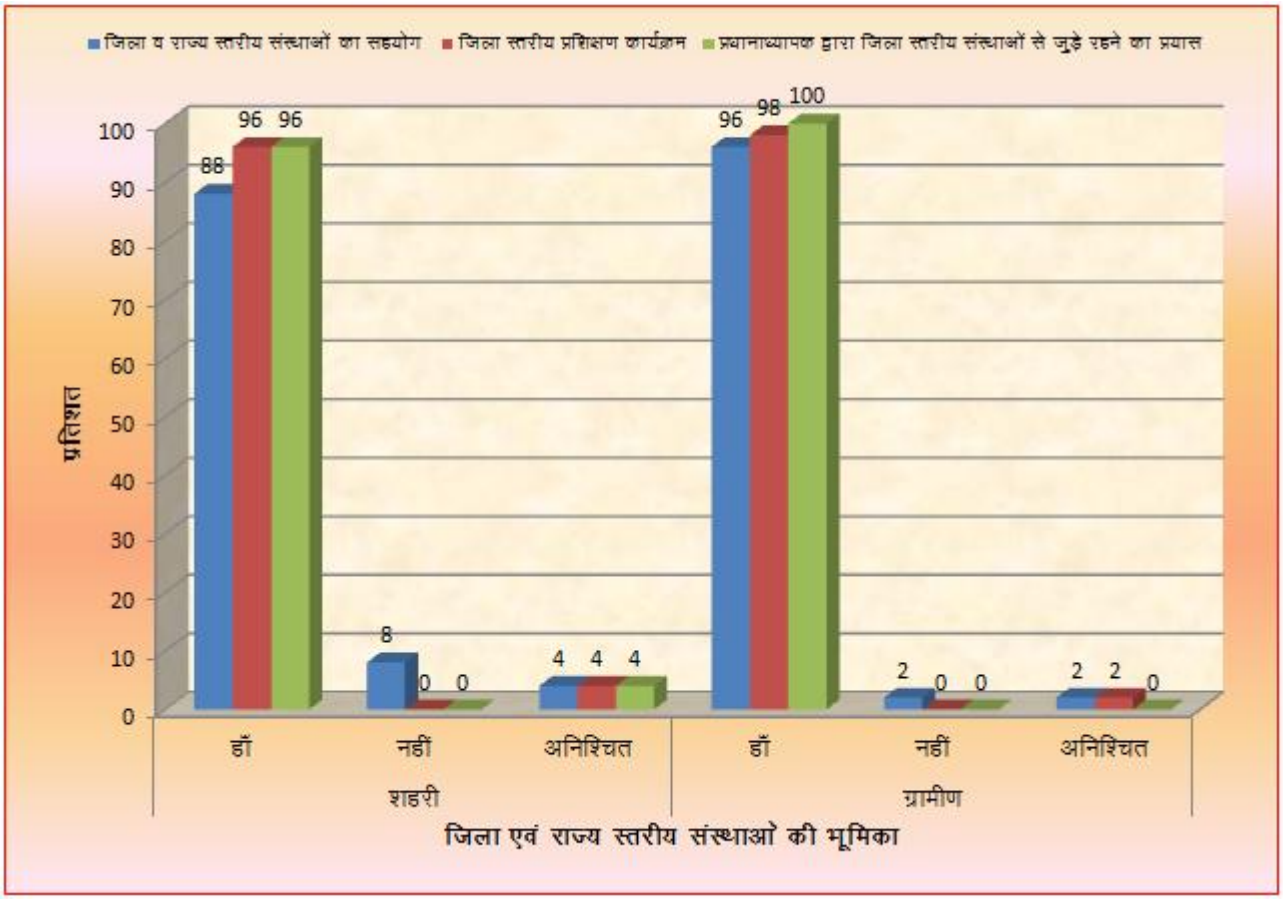

आरेख संख्या–2

उदयपुर जिले में ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में संचालित S.I.Q.E. कार्यक्रम में जिला एवं राज्य स्तरीय संस्थाओं की भूमिका की स्थिति का तुलनात्मक प्रतिशतवार मत

निष्कर्ष

(1) शिक्षकों के अभिमतों से प्राप्त निष्कर्ष के अन्तर्गत एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम उदयपुर जिले के सभी शहरी व ग्रामीण समन्वित विद्यालयों में संचालित है। इस कार्यक्रम से विद्यार्थियों की पढ़ने में रूचि बढ़ी है तथा शहरी (74 प्रतिशत) व ग्रामीण (78 प्रतिशत) विद्यालयों में गतिविधि आधारित शिक्षण कराया जाता है और विद्यालयों में गतिविधि आधारित शिक्षण कराया जाता है और उसे और अधिक करने की आवश्यकता है।

(2) एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम को द्वारा सीखने–सिखाने की स्थिति में अतंर आया है। जिसमें सीखने के अवसरों, विद्यार्थियों के उत्तर देने व सहभागिता में वृद्धि हुई है, तथा समूह चर्चा आयोजन व व्यावहारिक ज्ञान में शहरी व ग्रामीण विद्यालय में सकारात्मक वृद्धि हुई है।

(3) विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान किया जाता है तथा शिक्षण के दौरान सभी विद्यार्थियों का समान ध्यान रखा जाता है जिससे कक्षा का वातावरण लोकतांत्रिक रहता है।

(4) एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम से परीक्षा परिणाम व शिक्षक विद्यार्थी संबंधों में सुधार आया है।

(5) पुस्तकालय, फर्नीचर, कक्षा–कक्षा रेम्प, बिजली की स्थिति ग्रामीण की अपेक्षा शहरी विद्यालयों में ज्यादा अच्छी है।

(6) ग्रामीण की अपेक्षा छात्रों के सीखने रूची व शिक्षण में बच्चों की सहभागिता शहरी विद्यालयों में अधिक है।

सुझाव

निष्कर्षों के प्रतिपादन मात्र से शोधकार्य की इतिश्री नहीं होती बल्कि उन शोध निष्कर्षो के आधर पर सम्बन्धित विभिन्न पक्षों पर सुझाव देना आवश्यक है अतः शोधार्थी ने अपने निष्कर्षो के आधार पर संवेगात्मक बुद्धिमता व समायोजन से सम्बन्धित निम्नलिखित सुझाव दिये है जो कि विद्यालय विद्यार्थी, अभिभावक तथा अध्यापक से सम्बन्धित है।

1. **एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु**

(अ) अभिभावकों का सहयोग

(i) अभिभावकों को जागरूक करने का प्रयास करें ताकि वे बच्चों को समय पर व रोजाना विद्यालय भेजने के लिए तत्पर हो।

(ii) अभिभावक विद्यार्थियों को घर पर भी पढ़ने में सहयोग करें।

(ब) शिक्षण के लिए पर्याप्त सहायक सामग्री

(i) राज्य व जिला स्तरीय संस्थाओं द्वारा उपलब्ध करायी गयी शिक्षण अधिगम सामग्री पाठ्यक्रम के अनुरूप पर्याप्त मात्रा में हो, पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को पूरा करती हो तथा बालकों के लिए रूचिपूर्ण होनी चाहिए।

(ii) पाठ्यक्रम द्वारा अनुशासन, आदर, शिष्टाचार, नम्रता व स्वच्छता से संबंधित आदतों में सुधार की आवश्यकता है।

2. एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम द्वारा शहरी व ग्रामीण विद्यालयों में सीखने–सीखाने की स्थिति में अंतर आया है, लेकिन शहरी की अपेक्षा ग्रामीण विद्यालय में ओर सुधार की आवश्यकता है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों कें बालकों में रहन–सहन व पढ़ाई के प्रति जागरूकता बढ़ें।

3. बच्चा के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों का निर्माण होना चाहिए और समय–समय पर क्वीज, वाद–विवाद जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन होना चाहिए जिससे उनके मानसिक स्तर में वृद्धि हो सके। विद्यालयों में शिक्षाप्रद फिल्मों को भी दिखाई जानी चाहिए जिससे उनके मानसिक स्तर के वृद्धि हो सके।

4. पाठ्यपुस्तकें बच्चों के स्तर के अनुकूल होनी चाहिए तथा कमजोर बच्चों के लिए अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था करनी चाहिए।

5. विद्यालयों में शिक्षकों की कमी को पूरा करना चाहिए तथा शिक्षकों को विद्यालयों के अतिरिक्त काय से निवृत करना चाहिए जिससे वे अपना सम्पूर्ण ध्यान बच्चों को पढ़ाने में लगा सके।

6. एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम से परीक्षा परिणाम शिक्षक विद्यार्थी संबंधों में सुधार आया है। गतिविधि आधारित शिक्षण से शिक्षक–विद्यार्थी की सहभागिता बढ़ी है तथा छात्र खुलकर शिक्षक से अपनी समस्या के बारे में चर्चा कर पाते है।

7. ग्रामीण विद्यालयों में पुस्तकालय फर्नीचर, रेम्प, बिजली, कक्षा–कक्ष की स्थिति को सुधारने की आवश्यकता है।

8. शहरी विद्यालयों में शिक्षकों की कमी को दूर करने के लिए शिक्षकों की उचित अनुपात में व्यवस्था करनी चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त परिणामों से कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुआ जिनका यथोचित उपयोग समस्याओं का हल ढूढ़कर पर एस.आई क्यू.ई. कार्यक्रम को ओर अधिक सफल बनाने के लिए किया जा सकता है। प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम की स्थिति, समस्याएं और सुझाव के समाधान के बारे में पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

1. एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम के इस शोध के द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों की स्थिति व होने वाली समस्याओं से अवगत हो सकेंगे व उनके निवारण के प्रयास कर सकेंगे।

2. इस शाध में प्रधानाध्यापक द्वारा दिए गए सुझावों को एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम को ओर अधिक सफल बनाने के प्रयास किये जा सकेंगे।

3. जिला स्तरीय संस्थाएँ शोध से एस.आई.क्यू.ई. कार्यक्रम के क्रियान्वयन में होने वाली कठिनाईयों से अवगत हो सकेंगे। तथा इनमें सुधार के प्रयास कर सकेंगे।

4. राज्य स्तरीय संस्थाएँ इस शोध के माध्यम से इस कार्यक्रम की स्थिति व समस्याओं का पता लगाकर गुणात्मक प्रशिक्षण पर जोर दे सकती है।

REFERENCES

BOOKS (English):-

1. Karlinger,F.N.(1963): Foundation of Behavioual Research. Delhi: Subject Publication.

2. Saxena, N.R. (1996): Fundamental of Educational Research. Meerut Surya Publication.

3. Sharma,R.A.(1986): Methodology of Education Research. Delhi Surjeet Publication

4. Good, C.V. (1953): Introduction Education Research. Second Edition. New york: Appleton century crafts in.

5. Best, J.W. (1963): Element to Education Research Englewood Clifts. New york. Prentice Hall Inc.

BOOKS (Hindi)

1. भटनागर, आर.पी. (1995) शिक्षा अनुसंधान विधि एवं विश्लेषण आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।

2. कपिल एच. के. (1995) सांख्यिकी के मूलतत्व आगरा विनोद पुस्तक मंदिर।

3. भटनागर, सुरेश (1995) शिक्षा मनोविज्ञान मेरठ इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।

4. सुखिया, एम. पी. मल्होत्रा, पी.वी. (1970) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व आगरा विनोद पुस्तक मंदिर।

5. शर्मा, बी.एल. माहेश्वरी, वी के (2001) सामाजिक अध्ययन शिक्षण मेरठः आर. लाल. बुक डिपो।

6. शर्मा आर. ए. (1995) शिक्षा अनुसंधान, मेरठ आर. लाल बुक डिपो।

7. श्री वास्तव, डी.एन. (2001) शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, जयपुरः अपोलो।

8. श्री वास्तव, डी.एन. (2001) अनुसंधान विधियाँ, आगरा साहित्य प्रकाशन।

9. रूहेला एस.पी. (2001) विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, आगरा विनोद पुस्तुक मंदिर।

10. गुप्ता,एस.पी.गुप्ता, अलका (2007). सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहबादः शारदा पुस्तक भवन।